6

संग्रहालय – शिक्षा का एक सशक्त उपकरण

अवधेश कुमार*
रमेश कुमार**

शिक्षा के विभिन्न उपकरणों में संग्रहालय एक सशक्त उपकरण है। यह सिर्फ अतीत की समझ को हीं परिपक्व नहीं बनाता बल्कि अतीत की रिक्तता को भी भरने का कार्य करता है। अत: शिक्षा के दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण इन विविध संग्रहालय के स्वरूपों, उनके व्यवस्थापन, संचालन एवं गतिविधियों से पाठकों को अवगत कराना ही उक्त आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

वर्तमान समय में भारत में विविध प्रकार के लगभग एक हजार संग्रहालय हैं। अपने क्रिया-कलापों तथा गतिविधियों के माध्यम से लोगों को शिक्षा प्रदान करना उनका मुख्य लक्ष्य है। ये बच्चों की औपचारिक शिक्षा को भी आसान और मनोरंजनपूर्ण बना सकते है इस पर चर्चा करने से पूर्व इस बात पर विचार करना समीचीन होगा कि संग्रहालय क्या है और उसका स्वरूप कैसा होता है?

हमारा संग्रहालय शब्द अँग्रेज़ी के म्यूजियम शब्द का समानार्थी है और म्यूजियम शब्द की उत्पत्ति यूनानी (ग्रीक) शब्द "म्यूजियम" से हुई है जिसका अर्थ होता है "सैचुअरी ऑफ म्यूजेज"। म्यूजेज कला एवं विद्या की अधिष्ठात्री देवियाँ है जिनकी संख्या नौ हैं। (Endnotes) इस प्रकार प्राचीन समय में संग्रहालय का तात्पर्य कला एवं ज्ञान की देवियों के मंदिर से था न कि कला वस्तुओं के संग्रह स्थान से। कला वस्तुओं के संग्रह स्थान के लिए संग्रहालय शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग पुनर्जागरण काल (15वीं सदी) में "लोरेंस" में हुआ। इसके बाद से उसके शैक्षणिक स्वरूप में उत्तरोत्तर विकास होता गया।

संग्रहालय या म्यूजियम शब्द को परिभाषित करने का प्रयास भारत व विश्व के अनेक संग्रहालयविदों व संग्रहालय विज्ञान से जुड़ी संस्थाओं द्वारा किया गया लेकिन आज तक किसी ऐसी सर्वमान्य परिभाषा का प्रतिपादन नहीं किया जा सका जो संग्रहालय के उद्देश्य व व्यापकता को पूर्णरूप से प्रस्तुत (स्पष्ट) कर

**निदेशक*, इंस्टीट्यूट ऑफ फाईन आर्ट्स, वाराणसी-221005
***सहायक आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली-110016

सके। यहाँ पर हम आइकाम (ICOM), जो यूनेस्को की एक शाखा है, की संग्रहालय संबंधी परिभाषा को सरल शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं–"एक अलाभकारी स्थाई संस्था, जो जनता की सेवा और विकास में कार्यरत हो, जो जनता के लिए खुली हो जो अध्यापन शिक्षा व आनंद के लिए मनुष्य व उसके आस-पास की सामग्रियों (कलाकृतियों) का संग्रह, संरक्षण, शोध व प्रदर्शन करती है।" अर्थात् संग्रहालय एक ऐसी अलाभकारी संस्था है जो जनता के लिए स्थाई रूप से खुली रहती है और वह जनता की स्वस्थ मनोरंजन व विकास के लिए मनुष्य एवं उसके आस-पास की भौतिक सामग्रियों का समाज के स्वस्थ मनोरंजन के लिए संग्रह, संरक्षण, शोध और प्रदर्शन करती है। यहाँ एक और प्रश्न पर विचार कर लिया जाए कि समाज में जो अनेक लोग सिक्कों, डाक टिकटों व अन्य सामग्रियों का संग्रह एवं संरक्षण करते है वे भी संग्रहालय हैं या नहीं, जवाब है नहीं क्योंकि वे जनता के अवलोकनार्थ स्थाई रूप से खुले नहीं रहते।

यह तो हुई संग्रहालय शब्द की उत्पत्ति व परिभाषा की बातें। अब यह भी विचारणीय है कि विश्व का प्राचीनतम संग्रहालय कौन-सा है? यहाँ साहित्यिक संदर्भों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अलैक्जेंड्रिया नामक स्थान पर अलैक्जेंडर के उत्तराधिकारी टालमी सोटर (325-285 ई.पू.) द्वारा स्थापित संग्रहालय ही प्रचीनतम संग्रहालय है। इस विशिष्ट संग्रहालय में अन्य सामग्रियों के अतिरिक्त पकी हुई मिट्टी के टिकरों या पट्टियों पर लिखित चार लाख से अधिक पोथियाँ थीं। वर्तमान में उपलब्ध संग्रहालयों में विश्व का प्राचीनतम संग्रहालय ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का आश्मोलिपन संग्रहालय (1683 ई.) है, जो प्राचीनतम विश्वविद्यालयीय संग्रहालय के रूप में भी जाना जाता है।

भारत का प्राचीनतम ज्ञात संग्रहालय 1814 ई. में स्थापित भारतीय संग्रहालय, कोलकाता है। लेकिन भारत में भी संग्रह की परंपरा अति प्राचीन है। अर्थशास्त्र व विनयपिटक जैसे ग्रंथों में विविध प्रकार की वस्तुओं के संग्रह एवं संरक्षण का विस्तृत विवरण मिलता है। विष्णुधार्मोत्तरपुराण के चित्रसूत्र नामक प्रकरण में चित्रशालाओं का उल्लेख मिलता है जहाँ चित्रों का संग्रह एवं प्रदर्शन किया जाता था। राजाओं महाराजाओं ने भी इस दिशा में सराहनीय कार्य किए। इनके संग्रह पुस्तक प्रकाश, सरस्वती भण्डार, पोथी खाना व सूरत खाना आदि नामों से जाने जाते थे। मुगलों के पुस्तकालय व चित्र-संग्रह क्रमशः कुतुबखाना व तस्वीरखाना नाम से जाने जाते थे। ये संग्रह केवल कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के लिए ही उपलब्ध थे और उन तक सामान्य जनता की पहुँच नहीं थी। 18वीं शदी में राजनीतिक तथा आर्थिक क्रांतियाँ प्रारंभ हुई उन्होंने एक प्रजातांत्रिक समाज को जन्म दिया और संग्रहालय के क्षेत्र में भी यह धारणा बलवती हुई कि इन संग्रहों में सुरक्षित सामग्रियाँ जनता की हैं इसलिए वे सामान्यजन के लिए सुलभ होनी चाहिए। इस प्रकार संग्रहालय भी *"जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए"* सिद्धांत पर कार्य करने लगे।

संग्रहालय के पाँच प्रमुख कार्य हैं– कलाकृतियों का संग्रह, प्रलेखन, संरक्षण, प्रदर्शन व प्रकाशन जिसे वे जनता के शिक्षार्थ व मनोरंजनार्थ करते हैं। आरंभ में संग्रहालय कलाकृतियों के संग्रह पर विशेष ध्यान देते थे और अधिक-से-अधिक कलाकृतियों का संग्रह कर उन्हें वीथिकाओं या गैलरी में प्रदर्शित कर देते थे। इस प्रकार संग्रहालय कलात्मक एवं दुर्लभ वस्तुओं से भर गए और जब दर्शक गैलरी में आता था तो वह आश्चर्यचकित निश्चित रूप से होता था पर कुछ ख़ास सीख नहीं पाता था। फलस्वरूप संग्रहालयविदों ने दर्शकों के मनोविज्ञान का अध्ययन करके यह निर्णय लिया कि दर्शकों को संग्रहालय की सारी वस्तुओं, जिनकी संख्या हजारों में होती थी को न दिखाकर कुछ चुनी हुई कलाकृतियों को व्यवस्थित ढंग से दिखाया जाए अर्थात वे "Show less but show well"•सिद्धांत पर कार्य करने लगे। और अब संग्रहालय शिक्षा के एक सशक्त उपकरण के रूप में परिवर्तित होते जा रहे हैं।

यदि देखा जाए तो संग्रहालयीय शिक्षा एक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि यहाँ परंपरागत कक्षाओं के विपरीत विभिन्न आयुवर्ग, भाषा, शैक्षणिक स्तर आदि के लोग आते हैं और अपनी रूचि के अनुसार कलाकृतियों को देखते हैं और अपनी स्वेच्छा से ही चले जाते हैं। इसी समयावधि में ही संग्रहालय को अपने प्रस्तुतीकरण एवं क्रिया कलापों के माध्यम से उनके मन-मस्तिष्क में बैठ जाना होता है। एक सजग संग्रहालय अपना शैक्षणिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए निम्नलिखित कार्य करता है–

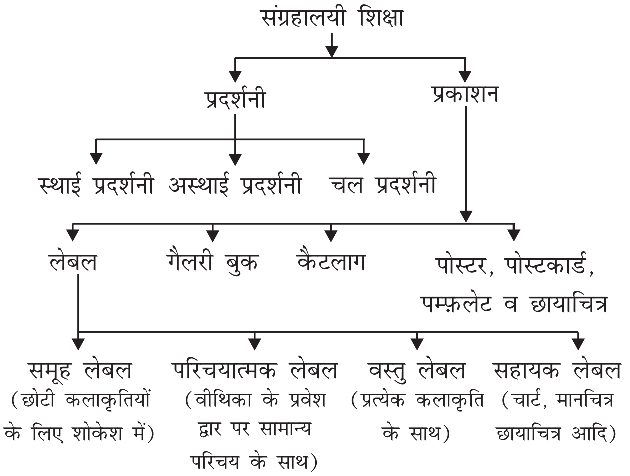

प्रदर्शनी

किसी भी संग्रहालय के पास उसकी प्रकृति व विषय के अनुरूप बड़ी संख्या में सामग्रियों का संग्रह होता है इस विशाल संग्रह में से जब कुछ कलाकृतियों को जनता के अवलोकनार्थ विथिकाओं में प्रदर्शित करने के लिए चयनित किया जाता है तो वे चुनी हुई वस्तुएँ प्रदर्शनी (exhibits) कहलाती हैं। इन प्रदर्शों को संग्रहालय अपने उद्देश्य नीतियों के अनुसार अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत करता है। वैसे तो प्रदर्शनियाँ कई प्रकार की होती हैं लेकिन सामान्यतौर पर संग्रहालयों द्वारा तीन प्रकार की प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं–

स्थाई प्रदर्शनियाँ वे हैं जो लंबे समय तक वीथिकाओं में आयोजित की जाती हैं। ये प्रदर्शनियाँ संग्रहालय समृद्धि गौरव की सूचक होती है। इसमें संग्रहालय की विशिष्ट एवं

विलक्षण कृतियों को शास्त्रीय ढंग से संयोजित या प्रदर्शित किया जाता हैं। ये स्थाई प्रदर्शनियाँ हैं तो इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे हमेशा के लिए वीथिकाओं में प्रदर्शित कर दी गई हैं। दर्शकों के आकर्षण को बनाए रखने के लिए कुछ प्रदर्शनों को वीथिकाओं से स्टोरेज में और स्टोरेज से वीथिकाओं में स्थानांतरित करते रहना चाहिए। अस्थाई प्रदर्शनियाँ वे होती हैं जो एक निश्चित समय के लिए आयोजित की जाती हैं। ऐसी प्रदर्शनियाँ किसी विशेष अवसर (मेला त्योहार आदि) पर भी आयोजित की जाती हैं। इसके लिए कुछ वस्तुएँ देश के दूसरे संग्रहालयों या कभी-कभी विदेशों से भी उधार पर ली जाती हैं। प्रदर्शनी की समाप्ति पर उन्हें संबंधित संग्रहालय को वापस कर दिया जाता हैं। इससे शिक्षा के साथ-साथ उनमें आपसी सहयोग भी बढ़ता हैं। शैक्षणिक दृष्टि से अस्थाई प्रदर्शनियाँ स्थाई प्रदर्शनियों से अधिक उपयोगी होती हैं। इसमें किसी एक विषय के सभी पक्षों को देखने व समझने का अवसर मिलता हैं। यह विद्यार्थियों के लिए भी विशेष उपयोगी होती हैं क्योंकि वे बार-बार आते हैं। तो उन्हें यहाँ हर बार कुछ नया सीखने व देखने को मिलता हैं। प्रदर्शनियाँ आज सभी आधुनिक संग्रहालयों के आवश्यक अंग बन गए हैं। इस प्रकार की प्रदर्शनियों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे दर्शक अधिक आकर्षित हो।

चल प्रदर्शनियाँ भी एक प्रकार की अस्थाई प्रदर्शनियाँ होती हैं अंतर केवल यह होता है कि ये संग्रहालय से बाहर विभिन्न स्थानों पर जाती हैं और अस्थाई प्रदर्शनियाँ संग्रहालय के अंदर ही एक सीमित समय के लिए आयोजित की जाती हैं। सामान्यतया संग्रहालय शहरी क्षेत्रों में स्थापित किए गए हैं जिससे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूल व अन्य दर्शक वहाँ नहीं पहुँच पाते। उनके लिए संग्रहालयों ने अपनी चारदीवारी से बाहर निकलकर उनके बीच पहुँचना शुरू किए। इसके लिए म्यूजियो-ट्रेन, म्यूजियो बस, म्यूजियो-जीप तथा म्यूजियो किट-बैग आदि का प्रयोग किया जाता है। म्यूजियो-ट्रेन विदेशों में अधिक प्रचलित हैं। भारत में इस प्रकार की ट्रेनें समय-समय पर चलाई जाती हैं लेकिन इसके लिए अधिक धन की आवश्यकता होती है। चल प्रदर्शनियों को संग्रहालय और मंत्रालय के सहयोग से आयोजित किया जाता है। म्यूजियो बस का संचालन राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली भारतीय संग्रहालय, कोलकाता तथा बिरला इंडस्ट्रियल एवं टेक्नोलाजीकल म्यूजियम, कोलकाता तथा सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद जैसे संग्रहालय करते हैं। म्यूजियो-किट एक विशेष प्रकार का बैग होता है जिसमें संग्रहालय कर्मचारी प्रदर्शित की जाने वाली वस्तुओं को रखकर ले जाते है और विद्यालयों व अन्य स्थानों पर प्रदर्शित कर उनके बारे में समझाते हैं।

इस प्रकार की प्रदर्शनी के लिए संग्रहालयीय कलाकृतियों की प्रतिकृतियाँ, छायाचित्र, प्रिंट्स, फोल्डर व चित्र आदि रखते हैं। म्यूजिओ बस में इस प्रकार की सामग्रियों को वीथिकाओं की ही तरह प्रदर्शित करके पूर्व निर्धारित स्थानों पर घुमाया जाता है। बाहर कलाकृतियाँ अपेक्षाकृत

कम सुरक्षित रहती है इसलिए प्रतिकृतियों का प्रयोग करते हैं।

प्रकाशन

सामान्य अर्थों में प्रकाशन का अर्थ होता है जनता या विद्वानों के लिए छपी हुई सामग्रियाँ तैयार करना। संग्रहालयीय प्रकाशन में संग्रहालय के संग्रह व प्रदर्शनियों से संबंधित शोधों के बारे में शोध करके दर्शकों के लिए प्रकाशित किया जाता हैं।

प्रकाशन का उद्देश्य अधिक-से-अधिक दर्शकों को आकर्षित करके उन्हें संग्रहालयीय कलाकृतियों के महत्त्व से अवगत करना होता है। ऐसे प्रकाशनों का तात्कालिक लाभ के साथ-साथ दीर्घकालिक लाभ यह होता है कि प्रदर्शनियाँ तो एक निश्चित समय के बाद हट जाती हैं लेकिन प्रकाशन उनसे संबंधित सूचनाओं को भविष्य के लिए सुरक्षित रखते हैं। प्रदर्शनियों से संबंधित प्रकाशन की प्रामाणिक सूचनाएँ सरल भाषा में लिखनी चाहिए। वैसे तो संग्रहालय में अनेक तरह के प्रशासनिक व शैक्षणिक प्रकाशन होते हैं लेकिन यहाँ पर प्रदर्शनियों से संबंधित केवल उन्हीं प्रकाशनों का उल्लेख किया जाएगा जिनका छात्रों व अन्य दर्शकों से संबंध होता है–

लेबल

संग्रहालय में सुरक्षित या वीथिकाओं में प्रदर्शित वस्तुओं में प्रतीकों एवं चिन्हों के रूप में अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएँ सन्निहित या जुड़ी हुई होती हैं। जिसे विषय के विद्वान तो समझ पाते हैं लेकिन भाषाई या शाब्दिक सहायता के बिना सामान्य दर्शक व विद्यार्थी उन्हें नहीं समझ पाते। इस प्रकार लेबल वस्तु के प्रतीकों एवं चिन्हों की भाषा को पठनीय भाषा में अनुवादित कर देता है अर्थात् लेबल प्रदर्शों के बारे में लिखा हुआ शब्द या शब्दों का समूह होता है। इसे सामान्यतया कागज, प्लास्टिक या कपड़े के टुकड़े पर लिखकर वस्तु या प्रदर्श के साथ लगा देते हैं। लेबल तैयार करते समय इसके आकार, भाषा, अक्षरों के आकार, उसे लगाने के स्थान आदि तथ्यों पर विचार करने की आवश्यकता होती है लेकिन यहाँ पर इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि लेबल में सरल भाषा में उस वस्तु की पंजीकरण या पहचान संख्या, वस्तु का नाम, शैली, काल, माध्यम व प्राप्ति स्थान जैसी महत्वपूर्ण व संक्षिप्त सूचनाएँ ही हिंदी व अंग्रेज़ी में लिखनी चाहिए। संग्रहालय जिस क्षेत्र में स्थित हो वहाँ की क्षेत्रीय या स्थानीय भाषा में भी आवश्यकतानुसार लेबल लगाकर वहाँ की जनता को भावनात्मक महत्त्व प्रदान किया जा सकता है। लेबल हमेशा टाइप किया हुआ होना चाहिए न कि हाथ से लिखा हुआ जिससे कि उसे पढ़ने में असुविधा न हो। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि लेबल अति आवश्यक है लेकिन उसे संक्षिप्त होना चाहिए।

यदि किसी संग्रहालय के आस-पास दृष्टिहीनों का विद्यालय आदि हो तो आवश्यकतानुसार लूई ब्रेल लिपि में भी लेबल लगाए जा सकते हैं। वैसे इस प्रकार के दर्शकों के लिए एक अलग गैलरी बनाना भी काफ़ी

सहायक होगा और उस कक्ष में मूल कलाकृतियों की प्रतिकृति (replica) या प्लास्टर कास्ट भी प्रदर्शित किए जा सकते हैं जिससे वे उन्हें हाथ से छूकर महसूस कर सकें। ऐसा करने से मूल कलाकृति सुरक्षित रहेगी और उन दर्शकों की भावनात्मक आवश्यकता की पूर्ति भी हो जाएगी।

गैलरी बुक

गैलरी बुक को गाइड बुक नहीं समझना चाहिए क्योंकि गाइड बुक में पूरे संग्रहालय से संबंधित सामान्य सूचनाएँ होती हैं जबकि गैलरी बुक उस गैलरी या वीथिका विशेष की कलाकृतियों से संबंधित होती है जिसके लिए वह तैयार की जाती हैं। यह दर्शकों से संबंधित होती है इसलिए इसमें प्रशासनिक सूचनाएँ जैसे– मूल्य, प्राप्ति का साधन, बीमा-मूल्य आदि नहीं होने चाहिए। इसमें वस्तु या प्रदर्श के शैक्षणिक, कलात्मक व सौंदर्यगत विशेषताओं को प्रकाशित करना चाहिए। इसके लिए वीथिकाओं के प्रवेश द्वार के पास 'गैलरी बुक' लिखा प्लास्टिक या लकड़ी का एक बाक्स लगाना चाहिए जिसमें ये पुस्तिकाएँ रखी हो। उस बाक्स पर यह भी लिखा होना चाहिए की भ्रमण के बाद या उपयोग के बाद पुस्तिका यहाँ रखें। इस प्रकार की व्यवस्था भारत कला भवन, वाराणसी की निधी विथिका में की गई है।

कैटलॉग

सामान्यता कैटलॉग में चयनित कलाकृतियों का छायाचित्र के साथ संक्षिप्त कलात्मक एवं शैक्षणिक विवरण होता है। यह गैलरी बुक से समानता रखते हुए भी उससे भिन्न है। यह अपेक्षाकृत अधिक आकर्षक एवं कीमती होता है और गैलरी बुक की तरह केवल प्रदर्शन कक्ष तक ही सीमित नहीं होता। इसे संग्रहालय के विक्रय-पटल से बेचा भी जाता है और इसमें अनेक शोधपूर्ण सूचनाएँ भी होती हैं। इसमे वस्तु के छायाचित्र के साथ उसका माप, प्रकाशन संदर्भ और कलाकार का नाम व माध्यम आदि भी होना चाहिए। इसमें कलाकृति की कीमत, बीमा-मूल्य व प्राप्ति की तारीख आदि सूचनाएँ नहीं लिखनी चाहिए। इस प्रकार के कैटलॉग सभी संग्रहालयों को बनवाने चाहिए।

पोस्टर, पोस्टकार्ड, पम्फलेट, छायाचित्र

प्रदर्शनी से संबंधित पोस्टर, प्रमुख प्रदर्शों के पोस्टकार्ड व छायाचित्र बनवाना भी शैक्षणिक दृष्टि से काफ़ी उपयोगी है। पोस्टर प्रचार-प्रसार में सहायक होता है। इसे विद्यालयों के सूचना-पट्टों तथा बस-स्टैण्ड व हवाई-अड्डे आदि जैसे सार्वजनिक स्थानों पर सूचनार्थ लगवाया जा सकता है। पम्फलेट व फोल्डर मुफ़्त में दर्शकों को दिया जा सकता है जिससे उसे वे बाद में भी देख सकें और बार-बार संग्रहालय आने के लिए प्रेरित हो। प्रमुख प्रदर्शों के छायाचित्र सामान्यतया सभी लोग रखना चाहते हैं इसलिए इसे संक्षिप्त सूचनाओं के साथ छपवाकर लागत मूल्य पर बेचा जा सकता है। प्रदर्शनी से संबंधित मानचित्र व चार्ट का प्रयोग भी प्रदर्शनी के शैक्षणिक महत्त्व को बढ़ाता है।

संग्रहालयी शिक्षा को उपयोगी बनाने हेतु कुछ सुझाव

वैसे तो संग्रहालय के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने की शुरूआत का श्रेय विक्टोरिया एंड अलबर्ट म्युजियम, लंदन को दिया जाता है। संग्रहालय के शैक्षणिक उद्देश्य को उस समय और अधिक बल मिला जब यूनेस्को ने इस दिशा में प्रयास प्रारंभ किया। इसी क्रम में यूनेस्को द्वारा 1952 ई. में अमेरिका के ब्रूकलिन शहर में पहली बार संग्रहालयीय शिक्षा संबंधी एक संगोष्ठी हुई। इसके बाद इस क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रयास हुए और संग्रहालय के शैक्षणिक कार्यों की समीक्षा हुई और उसे व्यापक बनाने के सुझाव दिए गये। 1966 ई. में यूनेस्को का एक सम्मेलन भारत में हुआ परिणामस्वरूप यहाँ भी इस दिशा में और अधिक कारगर प्रयास शुरू किया गया। संग्रहालयीय शिक्षा को अधिक उपयोगी बनाने हेतु निम्नलिखित बातों पर ध्यानाकर्षण लाभप्रद होगा–

- संग्रहालय के पास उसके आकार और संभावित दर्शकों की संख्या के अनुसार आधुनिक उपकरणों (एल.सी.डी. प्रोजेक्टर, माइक्रोफ़ोन, पोडियम आदि) से युक्त एक व्याख्यान कक्ष होना चाहिए जहाँ विद्यार्थियों के समूह को संग्रहालय भ्रमण से पूर्व कुछ आवश्यक बातें, कलाकृतियों के छायाचित्र या लघु फ़िल्म दिखाई जा सकें। उससे विद्यार्थियों या दर्शकों को अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त हो सकेगा।
- यदि विद्यार्थियों की संख्या अधिक है तो उन्हें समान आयु एवं शैक्षणिक स्तर के अनुसार दस से पंद्रह के समूह में विभाजित कर लेना चाहिए क्योंकि समूह जितना बड़ा होगा शोरगुल या अव्यवस्था उतनी अधिक होगी और सीखने की प्राथमिकता उतनी कम हो जाएगी।
- संग्रहालय को समय-समय पर क्ले मॉडलिंग, चित्रकला व क्राफ़्ट से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करवाते रहना चाहिए। ऐसे प्रशिक्षण शिविरों से विद्यार्थियों को सीखने को तो मिलता ही है साथ-ही-साथ संग्रहालय की जीवंतता भी बनी रहती है और वह जनता से जुड़ा रहता है। कभी-कभी संग्रहालयों को प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करते रहना चाहिए। इसके लिए गर्मी की छुट्टियों का समय सबसे उपयुक्त होता है। नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट्, नई दिल्ली में इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
- संग्रहालय को अपने आस-पास के विद्यालयों से संपर्क करना चाहिए और विद्यालयों से कुछ ऐसे अध्यापकों का चयन करना चाहिए जिनकी रूचि संग्रहालय संबंधी गतिविधियों में हो। संग्रहालय ऐस लोगों को प्रशिक्षित करके उन्हें "संग्रहालय मित्र" की संज्ञा दे सकता है और फिर इन लोगों के माध्यम से विद्यार्थियों को संग्रहालय भ्रमण का प्रावधान करना चाहिए।

- सभी संग्रहालयों में उनके आकार और संभावित दर्शकों की संख्या के अनुसार एक या अधिक 'गाइड लेक्चरर' होने चाहिए। यदि कोई संग्रहालय ऐसा करने में समर्थ नहीं है तो वह अपने किसी कर्मचारी को यह कार्य सौंप सकता है या संग्रहालय मित्र का भी उपयोग इसके लिए किया जा सकता हैं।
- संग्रहालयों के शैक्षणिक कार्यक्रम को और अधिक समृद्धशाली बनाने के लिए प्रदेश व केंद्र सरकार के शैक्षणिक अधिकारियों, विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के साथ मिलकर संग्रहालय भ्रमण के कार्यक्रम का निर्धारण किया जा सकता है। इसमें एन.सी.ई.आर.टी. व इस प्रकार के अन्य संस्थान कारगर भूमिका निभा सकते हैं।
- संग्रहालयीय प्रदर्शनी को और अधिक सूचनाप्रद और आकर्षक बनाने के लिए इलेक्ट्रानिक मीडिया का भी प्रयोग उपयोगी होता है। आज देश के अनेक संग्रहालयों में टचस्क्रीन मशीनें लगी हैं। जिसमें सभी प्रदर्शों के बारे में विस्तृत सूचनाएँ उनके छायाचित्र के साथ संग्रहीत रहती हैं जिसका विद्यार्थी आवश्यकतानुसार उपयोग कर सकते हैं। राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली, पुरातत्त्व संग्रहालय सारनाथ, भारतीय संग्रहालय कोलकाता तथा राज्य संग्रहालय भोपाल में ऐसी व्यवस्था देखी जा सकती है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि यदि इन उपकरणों का उपयोग हो रहा है तो उनकी उचित देख-रेख भी होनी चाहिए। यदि कोई उपकरण खराब होता है तो उसे तुरंत ठीक कराया जाए या वीथिका से हटा दिया जाय।
- सामान्यतया संग्रहालयों में कई वीथिकायें होती हैं और उसका भ्रमण करते समय दर्शकों को थकावट भी होती है। इसे दूर करने के लिए प्रत्येक वीथी या गैलरी में बैठने की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए और यह व्यवस्था ऐसी जगह होनी चाहिए जहाँ से गैलरी की अधिकांश कलाकृतियों को देखा जा सके।
- दर्शकों की एकरसता (monotony) दूर करने के लिए संग्रहालय में दो-तीन वीथिकाओं के बाद एक ऐसा कक्ष हो जहाँ मधुर संगीत, बैठने के लिए सोफ़े, छोटे और सुंदर पेड़-पौधे, प्राकृतिक दृश्य आदि की व्यवस्था हो सके तो अच्छा होगा। यहाँ दर्शक कुछ समय आराम करके पुनः नए उत्साह के साथ आगे की वीथिकाओं का भ्रमण कर सकेगें।

देश व विश्व में विशिष्ट व दुर्लभ वस्तुओं के संग्रह और उसके संरक्षण की परंपरा अति प्राचीन है जिनका उपयोग करके संग्रहालय औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा के साधन के रूप में विकसित हो रहे हैं और संग्रहालयों के इस स्वरूप का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। यह एक प्रशंसनीय प्रयास है साथ ही उपयोगी भी।

संदर्भ

निगम, एम. एल. ***फंडामेंटल्स ऑफ म्यूजियोलाजी,*** देवा प्रकाशन, हैदराबाद, 1985,

लेविस, जी. डी. ***मैनुअल आर्फ क्युरेटरशिप,*** बटरबर्थ, लंदन, पृ.–71

सहाय, एस. एस. ***संग्रहालय की ओर***, पृ.–2

बनर्जी, एन. आर. ***म्यूजियम एंड कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया,*** अगम कला प्रकाशन, दिल्ली, 1990, पृ.–2

शर्मा, आर. सी. ***दि रोल एंड कांसेप्ट ऑफ यूनिवर्सिटी म्यूजियम,*** जर्नल ऑफ म्यूजियम एशोशिएशन, अंक स्प्ए

गैरेला, बा. ***भारतीय चित्रकला,*** चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, पृ.–23

शामशस्त्री, आर. ***कौटिल्याज अर्थशास्त्र,*** पृ.–55

शिवराममूर्ति, सी. ***साउथ इंडियन पेंटिगं,*** पृ.–3

मार्ले, जी. ***म्यूजियम्स टुडे,*** एम. एस. विश्वविद्यालय, बडौदा, 1963, पृ. –3